पौधारोपण एवं अनुरक्षण

- जून माह के दौरान वृक्ष के आधार में लगभग 1 से 1.5 फीट का वृत्ताकार घेरा बनाए तथा गोबर खाद का प्रयोग करके मिट्टी से ढँक दिया जाता है।
- खण्ड पौधारोपण के लिए प्रत्येक अल्टरनेटिव वर्ष में @ 2 क्रिगा. प्रति पौधे की दर से गोबर खाद का अनुप्रयोग किया जाता है।
- **अंतराल:** पौधारोपण प्रकार के अनुसार चाकी के लिए 4'x4'; आर्थिक पौधारोपण के लिए 6'x6' अथवा 6'x10 का अंतराल रखा जाता है।
- आवश्यकतानुसार पौधे को प्रशिक्षित (Training) किया जाए।
- बरसाती मौसम के दौरान मृदा की जुताई एक बार अथवा वर्ष में अधिकतम दो बार की जाए।
- **मलचिंग:** बेयर सॉइल पर सामग्री का अनुप्रयोग अथवा मौजूद पौधे के आसपास (घास की कतरन, पत्तियां, सूखीघास, स्ट्रा, छाल के टुकड़े बुरादा, लकड़ी के टुकड़े इत्यादि)
- **बंडिंग**: सम्पूर्ण कीटपालन प्रक्षेत्र को ज्ञात आकार के छोटे खण्डों में विभाजित जाता है ताकि वर्षा जल को बनाए रखा जाए तथा मृदा अपरदन से बचा जाए।
- अन्य जैसे :
  - नीम ऑयल केक @ 76.2 किग्रा प्रति हे./वर्ष
  - केंचुआखाद 2 किग्रा. प्रति पौधा/ वर्ष।

बुतरेबीसं, बिलासपुर प्रकाशन
विस्तार बुलेटिन सं : 7
प्रकाशन वर्ष - 2018

संपादन
एम एस राठौड़
एम चन्द्रशेखरैय्या
आर बी सिन्हा
आलोक सहाय

कापीराइट © केन्द्रीय रेशम बोर्ड

प्रकाशक :

निदेशक

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन,
केन्द्रीय रेशम बोर्ड
(वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)
प्रथम तल, पेण्डारी, पोस्ट ऑफिस- भरनी, भाया-गनियारी, बिलासपुर-495112 (छत्तीसगढ)

दूरभाष : 07752-291735,291736;
फेक्स : 07752 – 291735
ई-मेल: btssobil.csb@nic.in
वेबसाइट : www.btsso.org

(अपने स्मार्ट फोन के ऐप द्वारा इस क्यू आर कोड को स्केन करें।)

हिन्दी अनुवाद एवं टंकण
श्री फूल सिंह लोधी, कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी)

उष्णकटिबंधीय तसर में परपोषी पौधशाला उगाने की तकनीक

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन
केन्द्रीय रेशम बोर्ड
(वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)
प्रथम तल, पेण्डारी, पोस्ट ऑफिस- भरनी, व्हाया-गनियारी, बिलासपुर-495112 (छत्तीसगढ)

पौधशाला उगाना

संगठित वृक्षारोपण की स्थापना के लिए पौधशाला उगाना महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे प्रक्षेत्र में पौधों की जीवित रहने की दर को बढ़ती है।

- व्यवस्थित पौधारोपण के लिए फ्लेट अथवा समतल, ढालू, उपजाऊ, सरन्ध्र, लोमी, रेतीली, लोम, क्ले लोम भूमि का चयन किया जाता है।
- मृदा का pH मान 6.5 से 7.5 होना चाहिए।
- जहां आवश्यक हो वहां पर मृदा सुधार भी किया जाता है।
- पौधशाला उगाने के लिए उंची एवं सूखी भूमि होना चाहिए तथा पानी का जमाव नहीं होना चाहिए एवं उचित छाया होना चाहिए।

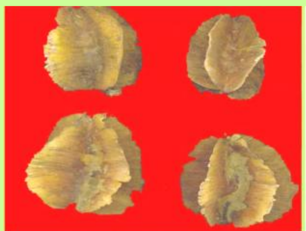

आसन बीज

अर्जुन बीज

- प्राकृतिक छाया से पूर्व अप्रैल – मई के दौरान प्लाटं से पके एवं परिपक्व बीज एकत्रित किए जाना चाहिए।
- बुबाई से पहले बीजों को उनकी कठोर त्वचा को नरम करने के लिए भिगोते हैं। अर्जुन के बीज को 96 घंटे तथा असन के बीज को 48 घंटे तक भिगोया जाता है।
- भिगोए गए बीजों को गनी बैग से हटा दिया जाता है तथा पेड़ के नीचे ढेर लगा कर रख देते हैं तथा गीले गनी बेग /कपड़े से ढँक देते है।
- अंकुरित होने तक आवश्यक आर्द्रता को बनाए रखने के लिए प्रतिदिन ढेर पर पानी का छिड़काव किया जाता है सामान्यतः 1500 से 2000 बीजों का ढेर आदर्श होता है।

- पोलिथीन ट्यूब में अंकुरित बीज नवोद्भित पौधे को बेहतर प्रत्यारोपण प्रदान करता है।
- सामान्यत: अंकुरण 6-8 दिनों के बाद शुरू होता है तथा 3 सप्ताह तक जारी रहता है।
- क्रमबद्ध अंकुरित बीज 30 सेमी x 10 सेमी आकार के पॉलीथीन ट्यूबों में बोए जाते हैं जिसमें वृद्धि माध्यम होते हैं।
- वृद्धि माध्यम गोबर खाद (एमवायएम) का मिश्रण होते हैं: अर्जुन के लिए मृदा: रेत का अनुपात 3:2:1 व असन बीज के लिए 1:3:1 का अनुपात होता है।
- पाक्षिक सिंचाई महत्वपूर्ण है। अथवा यथावश्यक होने पर सिंचाई की जाए।

- पॉलीथीन ट्यूबों में उगाए गए पौधे का लगभग 2 से 3 महीने तक अनुरक्षण किया जा सकता है।
- वांछित आर्द्रता का रखरखाव करने केलिए नियमित रूप से पानी का छिड़काव किया जाए।
- प्रबंधन के दौरान रोगों एवं अन्य पीड़कों को नष्ट करने के लिए सीडलिंग पर कार्बेन्डाज़ीम (0.01%) तथा डायमेथोड (0.02%) पौधशाला पीड़कों के छिड़काव के विरुद्ध रोगर 0.04% का प्रोफेलेक्टिक उपायों के रूप में 15 दिन के अंतराल में दो बार छिड़काव किया जाता है।
- सीडलिंग को पौधारोपण स्थल पर 1.50 मीटर की ऊंचाई प्राप्त करने पर प्रत्यारोपित किया जाना चाहिए।

पौधशाला के प्रारंभिक चरण में सीडलिंग

प्रक्षेत्र में स्थानांतरण हेतु तैयार पौध